श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का समाजभाषा-वैज्ञानिक अध्ययन

पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

के कला संकायांतर्गत हिंदी विषय में **पी-एच.डी.**

के लिए प्रस्तावित शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंधन की रूपरेखा

2015

शोधार्थी

वैभव कुमार पाण्डेय

शोध-केन्द्र

साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का समाजभाषा-वैज्ञानिक अध्ययन

पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

के कला संकायांतर्गत हिंदी विषय में पी-एच.डी.

के लिए प्रस्तावित शोध-उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंधन की रूपरेखा

2015

शोध-निर्देशक	सहा. शोध-निर्देशक	शोधार्थी
डॉ. आभा तिवारी	डॉ. व्यास नारायण दुबे	वैभव कुमार पाण्डेय
प्राचार्य	प्रोफेसर	पं.रविशंकर शुक्ल विवि, रायपुर
शास महा. पिथौरा	पं.रविशंकर शुक्ल विवि, रायपुर	

शोध-केन्द्र

साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

(अध्यादेश-४५ के खंड ५)

1. **शोध शीर्षक**

2. परिचय

3. पूर्व में इस क्षेत्र में किए गए कार्य की संक्षिप्त समीक्षा

4. उद्देश्य

5. प्रस्तावित कार्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान

6. प्रस्तावित कार्यप्रणाली

7. प्रस्तावित कार्य के अपेक्षित परिणाम

8. संदर्भ सूची

9. उम्मीदवार का पत्र-प्रकाशित की सूची

1. शोध शीर्षक -

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन

2. परिचय-

सौम्य-मृदुभाषी, सहज-सरल और साधारण, लेकिन असाधरण व्यक्तिव के धनी रहे श्रीलाल शुक्ल का जन्म 31 दिसंबर 1925 में लखनऊ जिले के एक छोटे से कस्बे अतरौली में किसान परिवार में हुआ था। श्रीलाल शुक्ल के पिता पंडित ब्रजकिशोर शुक्ल यद्यपि एक निर्धन किसान परिवार से आते थे, किन्तु साहित्य एवं संगीत में उनकी अभिरुचि सराहनीय थी। इनके दादा पंडित गदाधर शुक्ल भी संस्कृत, हिन्दी, फारसी एवं ऊर्दु के प्रकाण्ड विद्वान थे।

शुक्ल जी की प्रारंभिक शिक्षा मोहनलालगंज में हुई, जहां से उन्होंने मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस बीच श्रीलाल शुक्ल ने हिन्दी और संस्कृत की बहुत सी कविताएं याद कर ली थी। हाईस्कूल तक आते-आते उन्होंने संस्कृत बोलना शुरू कर दिया था। हाईस्कूल की परीक्षा उन्होंने कान्यकुब्ज कॉलेज कानपुर से पास की ।

बारहवीं के बाद आगे की पढ़ाई के लिए शुक्ल जी इलाहाबाद आ गए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से श्रीलाल शुक्ल ने बीए स्नातक की शिक्षा ग्रहण की। बीए की पढ़ाई के दौरान उनके पिता जी का देहांत हो गया। इलाहाबाद से स्नातक करने के बाद श्रीलाल शुक्ल ने लखनऊ विश्वविद्यालय में एम.ए. की शिक्षा ली और फिर एल.एल.बी. में प्रवेश ले लिया। लेकिन तभी वक्त ने करवट ली और परिस्थितां ऐसी आन पड़ी कि श्रीलाल शुक्ल को सन् 1949 में अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। इसके साथ ही शुक्ल जी के वे ख्वाब भी अधूरे रह गए जब वे लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ते वक्त यूनिवर्सिटी मैन बनने का देखा करते थे।

श्रीलाल शुक्ल का चयन वर्ष 1949 में उत्तर प्रदेश की राज्य सिविल सेवा में डिप्टी कलेक्टर पद के लिए हो गया। अब किसान परिवार का बेटा प्रशासनिक अधिकारी बन चुका था। डिप्टी कलेक्टर से शुक्ल जी ने नौकरी की शुरूआत की और फिर विभिन्न पदों में रहते हुए १९७३ में भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति मिली। शुक्ल जी १९८३ में सेवानिवृत्त हुए।

1953-54 ये वो वर्ष थे जब श्री शुक्ल के जीवन में एक नए युग का आगाज हुआ। ये युग था प्रशासनिक अधिकारी के जीवन में लेखक और एक परिपक्व साहित्यकार बनने का। उदय हो रहा था आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक नई सोच के लेखक का। ये शुरूआत थी शुक्ल जी के सक्रिय साहित्य यात्रा की। यकीन

मानों कि यह एक बेहद दिलचस्प शुरूआत थी। श्री शुक्ल ने बतौर लेखक अपनी साहित्यक यात्रा की शुरूआत 'स्वर्णग्राम और वर्षा' नामक एक व्यंग्य-कथा से की थी। इसके बाद तो निरंतर शुक्ल जी ने एक बाद एक कई रचनाएं लिखी जिनमें-

उपन्यास- सूनी घाटी का सूरज (1957), अज्ञातवास(1962), राग दरबारी(1968) आदमी का ज़हर(1972), सीमाएँ टूटती हैं(1973), मकान(1976), पहला पड़ाव(1987), विश्रामपुर का सन्त(1998)

व्यंग रचनाएँ- अंगद का पाँव (1958), यहाँ से वहाँ (1970), मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ (1979), उमरावनगर में कुछ दिन (1986), कुछ ज़मीन में कुछ हवा में (1990), आओ बैठ लें कुछ देरे (1995), अगली शताब्दी का शहर (1996), जहालत के पचास साल (2003), खबरों की जुगाली (2005)

कहानियाँ- कहानी संग्रह:यह घर मेरा नहीं है(1979), सुरक्षा तथा अन्य कहानियां(1991), इस उम्र में(2003), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2003)

आलोचना- अज्ञेय:कुछ रंग और कुछ राग (1999)

विनिबंध- भगवतीचरण वर्मा (1989), अमृतलाल नागर (1994)

बाल साहित्य- बब्बर सिंह और उसके साथी

श्रीलाल शुक्ल को मिले पुरस्कारों की सूची भी लम्बी हैः-

1970 में राग दरबारी के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित उन्हें कई प्रतिष्ठत संस्थानों ने पुरस्कृत किया । 2005 में उत्तर प्रदेश सरकार ने यश भारती सम्मान प्रदान किया। 2008 भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्म भूषण सम्मान और 2009 में साहित्य का सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री शुक्ल भारतेंदु नाट्य अकादमी लखनऊ के निदेशक तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की मानद फैलोशिप से भी सम्मानित थे। एक लेखक के रूप में श्रीलाल ने ब्रिटेन, जर्मनी, पोलैंड, सूरीनाम, चीन, यूगोस्लाविया जैसे देशों की यात्रा कर भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

28 अक्टूबर 2011 यह साहित्य जगत में एक अपूर्णीय क्षति वाली तारीख थी। क्योंकि यही वह तारीख थी जब आधुनिक हिन्दी साहित्य ने अपने सबसे बड़े हस्ताक्षर को खोया था। सुबह के तकरीबन साढ़े 11.30 बजें लखनऊ स्थित सहारा अस्पताल में श्रीलाल शुक्ल इस दुनिया से सदा के लिए अलविदा हो गए।

श्रीलाल शुक्ल ने अपने व्यंग्य, उपन्यास, कहानियों में उस वर्ग को रेखांकित किया जो सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था, जिसे हम लोकतांत्रिक व्यवस्था कहते हैं उसी के बीच पिस रहा है

। उन्होंने इस समाज के उसी भाषा को अपने लेखन का आधार है बनाया जो उपन्यास, कहानी या व्यंग्य में पात्र कहते जान पड़ते हैं । कहीं ठेठ गांव की भाषा तो कही शहरी अंग्रेजियत वाली भाषा। उन्होंने सरकारी व्यवस्था की दुर्दशा पर चुटीले, किन्तु करारा प्रहार किया है।

3. पूर्व में इस क्षेत्र में किए गए कार्य की संक्षिप्त समीक्षा-

श्रीलाल शुक्ल के साहित्य पर कई शोध-कार्य पूर्व में किए जा चुके हैं । इसमें पी-एच.डी., एम.फिल के शोध-कार्यों के साथ ही विद्वानों द्वारा की शोध समीक्षा शामिल है ।

श्रीलाल शुक्ल पर हुए शोध-कार्यों में नायर माया ने '**श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन**' किया। नायर माया ने अपने पी-एच.डी. कार्य के दौरान पाया कि श्री शुक्ल ने अपने उपन्यासों में विभिन्न प्रकार की शैलियों जैसे- समाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षेणिक, आंचलिक आदि का प्रयोग किया है । उन्होंने समाज के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक वर्ग के रहन-सहन, खान-पान, विचार, शिक्षा, संस्कृति सभी का वर्णन अपने उपन्यासों में अपनी शैली के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

राठोड़ डी. एम. ने '**श्रीलाल शुक्ल के औपन्यासिक सृष्टिः एक समीक्षात्मक अध्ययन**' पर पी-एच.डी. कार्य पूर्ण किया है। राठोड़ डी.एम. ने का कहना है कि श्रीलाल शुक्ल का लेखन स्वातंयोत्रर भारत के जनतंत्र की कथित आधुनिकता और विकास की खरी आलोचना है। साथ ही लोकतंत्र की यात्रा, सपनों के विध्वंस की, संस्थाओं, मूल्यों, नैकिताओं और आस्थाओं के क्षरण की कथा भी है।

चौधरी निर्देश ने '**श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन**' पर शोध-कार्य किया है। उन्होंने अपने शोध-कार्य में पाया कि श्रीलाल शुक्ल के पास वर्णन की, चित्र-चित्रण की अद्भूत क्षमता है और विलक्षण भाषा संवेदना है। श्रीलाल ने विभिन्न भाषाओं के शब्द भंडार का महत्वपूर्ण प्रयोग किया है। विषय-वस्तु, परिवेश और पात्रों के अनुरूप व्यंग्य प्रतीकों का अधिक्य उनके उपन्यासों में द्रष्टव्य है। भाषा का सौंदर्य अलंकारों, मुहावरों, लोकोक्तियों और सूक्तियों से अविष्कृत हुआ है। भाषा को व्यंग्य संकेत, किस्सागोई, डायरी, पत्र, बिम्ब, प्रतीक आदि वैविध्य के द्वारा प्रस्तुत किया है। सभी उपन्यासों के प्रतीक शैली-शीर्षक सार्थक और प्रतीकात्मक है।

4. उद्देश्य-

हर किसी के मन में ये सवाल हो सकता है कि तुम पी-एच.डी. क्यों करना चाहते हो ? तुमने अपने शोध-कार्य के लिए श्रीलाल शुक्ल के साहित्य को ही क्यों चुना ? आखिर क्यों लगा कि उनके उपन्यासों

का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए ? ऐसे सहज सवाल स्वभाविक है । मैं स्वयं अपने आप से भी यहीं सवाल करता हूँ कि इसके पीछे वजह क्या है, उद्देश्य क्या ? शायद मैं जो जवाब अभी दू उससे जानकार संतुष्ट हो यह जरूरी नहीं है या मैं खुद भी स्वयं को संतुष्ट कर पाऊँ ये भी जरूरी नहीं । फिर भी मैं यहाँ बेहद ईमानदारी के साथ यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि पी-एच.डी. करने के पीछे मेरा उद्देश्य स्वयं के रचनात्मकता और लेखन क्षमता को और विकसित करना उसे परिपक्कव बनाने के साथ ही सतत् अध्ययनशील बने रहना है । और जहाँ तक प्रश्न श्री शुक्ल के साहित्य के चयन का है तो श्री शुक्ल मेरी रुचि के रचनाकार है। क्योंकि वे उपन्यासकार ही नहीं, बल्कि चुटीले व्यंग्यकार भी थे। उन्होंने अपने उपन्यास में गाँव-गरीब, शोषित-मजदूर, लोकतांत्रिक सरकारी व्यवस्था से पिसते लोगों के मर्म को दर्शाया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ की पलायनवादी पीड़ा को बेहद मार्मिक रूप में, किन्तु आक्रोशित तरीके प्रस्तुत किया है। मेरी कोशिश होगी कि मैं व्यंग्य-उपन्यास कला में नवीन तथ्यों को रेखांकित कर सकूँ। मेरे शोध का उद्देश्य श्री शुक्ल के उपन्यासों में समाजभाषा की उस नवीन वैज्ञानिकता को ढूँढना है, जो अब तक के उनके ऊपर किए शोध-कार्यों में अप्राप्त हैं ।

प्रस्तावित शोध-कार्य से मेरा उद्देश्य -

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में समाज की भाषा और भाषायी तौर पर समाज में इसका विश्लेषण करना ।

श्रीलाल शुक्ल अपने कथानक में पात्रों की भाषा का चयन कहाँ से और कैसे करते थे ?

समाज की किन परिस्तिथियों ने श्रीलाल शुक्ल के लेखनी को दिशा दी ?

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में समाजभाषा का अर्थ क्या है ?

आर्थिक-राजनीतिक, समाजिक, सांस्कृतिक तौर पर भाषा के रूप किन-किन परिस्थतियों में समाज में कैसे बदलते है ?

समाजभाषा किस तरह से साहित्य को समझने में सहायक है ?

6. प्रस्तावित कार्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान-

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों एवं व्यंग्य लेखन पर शोध-प्रबंधों के साथ ही शोध-पत्र व अनगिनत आलेख हैं। श्रीलाल शुक्ल अपने उपन्यासों में सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षेणिक, प्रशासनिक, न्यायिक, सामुदायिक विकास योजना तथा गाँव की पंचायत व्यवस्था सभी पर व्यंग्य किया है। इसमें उन्होंने जिस भाषा-शैली का इस्तेमाल किया है वह समाज की ही भाषा है। उन्होंने साहित्यिक भाषा का कम और समाज के बीच की भाषा, जो कि उनके पात्रों को जीवंत बनाती है, उसी भाषा-शैली का प्रयोग किया है ।

मैं विनम्रता से यह प्रयास करूँगा कि श्रीलाल शुक्ल के आधार ग्रंथों और विद्वानों के शोध-प्रबंध, शोध-पत्रों से अपने शोध-कार्य में श्री शुक्ल के उपन्यासों में समाजभाषा का समुचित विश्लेषण कर नए

तथ्यों को साहित्य जगत में स्थापित कर पाऊँ।

6. प्रस्तावित कार्यप्रणाली-

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का सुक्ष्म अध्ययन करना। उनके ऊपर लिखित पुस्तक, उनके उपन्यासों पर शोध-कार्य का अध्ययन, उनके उपन्यासों की समीक्षात्क आलेख, प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया से विषय-वस्तु का अध्ययन करना। इंटरनेट पर मौजूद श्री शुक्ल से जुड़े दस्तावेज, पुस्तकालयों और शोध संस्थानों से प्राप्त शोध-पत्र, शोध-प्रबंध का अध्ययन करना। साक्षात्कार और प्रश्नावली के साथ श्री शुक्ल के उपन्यासों के पात्रों की भाषा को समाज में मौजूद जीवंत पात्रों के बीच जाकर उनका विश्लेषण करना ।

7. प्रस्तावित कार्य के अपेक्षित परिणाम-

इस शोध-कार्य के द्वारा मैं श्रीलाल शुक्ल के लेखन के प्रेरणा स्त्रोत से लेकर उनके समाजभाषा प्रकृति को जानने और समझने का विनम्रता के साथ प्रयास करूँगा। मैं इस शोध के दौरान इन अनुक्रमणिका के तहत श्री शुक्ल के उपन्यासों का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन करूँगा। उम्मींद है कि इन तत्वों के आधार पर मैं श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में समाजभाषा के नवीन तथ्यों को रेखांकित कर पाऊँ ।

रूपरेखा

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का समाजभाषा-वैज्ञानिक अध्ययन

प्रस्तावनाः

विषय प्रवेश

विषय की व्याप्ति एवं सीमाएँ

पूर्वानुसंधान

उद्देश्य

प्रथम अध्यायः श्रीलाल शुक्ल का व्यक्तिव एवं कृतित्व

1.0 प्रस्तावना

1.1 श्रीलाल शुक्ल का जीवन परिचय

1.2 व्यक्तित्व के प्रेरणा स्त्रोत

1.3 व्यक्तित्व

1.4 कृतित्व

द्वितीय अध्यायः समाजभाषा विज्ञान

2.0 प्रस्तावना

2.1 समाजभाषा विज्ञानः एक परिचय

2.2 कार्य-पद्धति

2.3 कार्य का स्वरूप

2.4 कार्य की सीमाएँ

तृतीय अध्यायः श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का समाजिक विवेचन

3.0 प्रस्तावना

3.1 श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में समाज की पारिस्थितिक संरचना

3.2 श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में सामाजिक संरचना

3.3 श्रीलाल शुक्ल जी के उपन्यासों में आर्थिक संरचना

3.4 श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में धर्म और संस्कृति

चतुर्थ अध्यायः श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में भाषा एवं सामाजिक परिवर्त्य

4.0 प्रस्तावना

4.1 अवस्था

4.2 जाति और वर्ग

4.3 परिस्थिति

4.4 श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में लोक साहित्य और लोक शब्दावली

पंचम अध्यायः श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का समाजभाषा वैज्ञानिक विश्लेषण

5.0 प्रस्तावना

5.1 भाषा और समाज का संबंध

5.2 वक्ता और श्रोता

5.3 विषय-वस्तु

5.4 स्थान

षष्ठ अध्यायः श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में प्रयुक्त कोड

6.0 प्रस्तावना

6.1 कोड विकल्पन

6.2 विविध कोड का विवेचन

6.3 विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त कोड

6.4 उपन्यासों में प्रयुक्त कोड का समाजभाषा वैज्ञानिक औचित्य

उपसंहार

परिशिष्ठ

साक्षात्कार

प्रश्नावली

8. संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ

शुक्ल श्रीलाल, सूनी घाटी का सूरज, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1957

शुक्ल श्रीलाल, अज्ञातवास, दिल्ली, राजपाल एंड संस, 1962

शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1968

शुक्ल श्रीलाल, आदमी का ज़हर, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1972

शुक्ल श्रीलाल, सीमाएँ टूटती हैं, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1973

शुक्ल श्रीलाल- मकान, दिल्लीः राधकृष्ण प्रकाशन, 1976

शुक्ल श्रीलाल, पहला पड़ाव, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन 1987

शुक्ल श्रीलाल, विश्रामपुर का संत, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन 1998

संदर्भ ग्रंथ -

अंग्रवाल महावीर(संपादक), व्यंग्य सप्तक एक, श्री प्रकाशन, दुर्ग,

चौधरी तेजपाल, समाज भाषाविज्ञान की भूमिका, जयपुरः पंचशील प्रकाशन, 1995

तिवारी भोलानाथा, भाषा और संस्कृति, दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, 1984

तिवारी पारसनाथ, भाषाविज्ञान, लखनऊः पं. पद्मधर मालवीय प्रकाशन, 1987

महाजन गिरीश एवं भाऊ साहे परदेशी, भाषाविज्ञान एवं समाजविज्ञान, कानपुरः चंद्रलोक प्रकाशन, 2002

मिश्र चंद्रप्रकाश, राग दरबारी कृति से साक्षात्कार, दिल्लीः संजय प्रकाशन, 2001

शर्मा रामविलास, भाषा और समाज, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2000

शांडिल्य राजेश्वरी, भाषा साहित्य एवं संस्कृति, कानपुरः अल्का प्रकाशन, 2001शुक्ल श्रीलाल, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 1978

सक्सेना द्वारिका प्रसाद, भाषाविज्ञान के सिद्धांत और हिन्दी भाषा, मेरठः मीनाक्षी प्रकाशन, 1994

सिंह कृपाशंकर एवं चतुभुर्ज सहाय, आधुनिक भाषाविज्ञान, दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2008

शोध-प्रबंध और लघु शोध

बैस सुनीता, छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन, लघु शोध, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, 1989-90

राठोड़ डी.एम., श्रीलाल शुक्ल औपन्यासिक सृष्टिः एक समीक्षात्मक अध्ययन, शोध-प्रबंध, सौराष्ठ विश्वविद्यालय, गुजरात, 2012

चौधरी निर्देश, श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, शोध-प्रबंध, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, 2015

शाकार मोतीलाल-- वृंदावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन शोध-प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल विश्विद्यालय, रायपुर, 2007

सोनी अंजु, मोहन राकेश के नाटकों का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पं.रविशंकर शुक्ल

सोनी अंजु, मोहन राकेश के नाटकों का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, 2002

इंटरनेट, पत्र-पत्रिकाएँ

इतिश्री - पुस्तक समीक्षा राग दरबारी , हिन्दी डॉटकुंज
कुमार अमितेष- लोकप्रियता और राग दरबारी(लेख), वेब साहित्यक पत्रिका
गौर राहुल- मझधार ब्लॉग(गुगल)
जैन विरेन्द्र- प्रवक्ता डॉटकॉम(गुगल)
जैन विरेन्द्र - श्रीलाल और राग दरबारी , साहित्य कुंज
शुक्ला अनूप- फुरसतिया साभार(गुगल)
सिंह मुरली मनोहर- हिन्दी वेबदुनिया(गुगल)
विकिपीडिया- - साहित्य डॉटकॉम(गुगल)

9. उम्मीदवार का पत्र-प्रकाशित की सूची- नहीं

शोध-निर्देशक	सहा. शोध-निर्देशक	शोधार्थी
डॉ. आभा तिवारी	डॉ. व्यास नारायण दुबे	वैभव कुमार पाण्डेय
प्राचार्य	प्रोफेसर	पं.रविशंकर शुक्ल विवि
शास. महा.,पिथौरा	पं.रविशंकर शुक्ल विवि, रायपुर	रायपुर, छत्तीसगढ़

अध्यक्ष
साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छत्तीसगढ़)